दीदी परी

* प्रह्लाद श्रीमाली

अमर को परी कथाओं का बड़ा शौक था। शुरु में दादी और माँ से सुना करता था। तीसरी–चौथी कक्षा तक आते–आते खुद पढ़ने–सुनाने लगा। परियों की जादुई ताकत उसे रोमांचित करती। उनकी सहृदयता उसमें श्रद्धा उत्पन्न करती और परियों का बुरी शक्तियों के खिलाफ संघर्ष उसका मनोबल बढ़ाता। अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता। लेकिन उसकी दीदी सुनीता को परी कथाएं बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थीं। एक तरह से उसे चिढ़ थी इन परी कथाओं से। वह इन्हें कोरी बकवास बताती। उसे परियों का पीछा छोड़ कर पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए कहती। अमर कसमसाता। दीदी की बात मानना उसकी मजबूरी थी। सुनीता दीदी उससे बहुत बड़ी थी। वह पांचवी में भर्ती हुआ था तब दीदी ने कॉलेज में दाखिला लिया था। दीदी टाइपिंग करती थी। और बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी। ऊपर से खुद कम्प्यूटर कोर्स भी कर रही थी। उसने कभी दीदी को फिजूल बैठे नहीं देखा। दादी के गुजर जाने के बाद से घर में मम्मी के कामकाज में भी वह बराबर हाथ बंटाती थी।पिताजी के नहीं रहने से घर की व्यवस्था के लिए यह जरूरी था।

''दीदी! क्या परियां सचमुच नहीं होती?'' एक बार अमर ने मचल कर पूछा था। ''नहीं रे, कोई परी–वरी नहीं होती। यह सब कोरी कल्पना है। वक्त गुजारने के लिए लोगों ने परियों के किस्से गढ़ रखे हैं। तू इन पर ध्यान देना छोड़ और लिखने–पढ़ने में मन लगा।'' दीदी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए गंभीरता पूर्वक कहा था। सुनकर वह गहरे विचार में पड़ गया था। उसे दीदी की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। पर इस बात को नकारने का प्रमाण भी तो उसके पास नहीं था। उसमें साहस नहीं था और संकोच भी था। वह कैसे बताता कि जिन परियों के अस्तित्व को दीदी सिरे से नकार रही है। उन परियों के

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रखने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रखने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रखने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

खयालों में वह दिन–रात खोया रहता है। अमर पूरे मन से चाहता है कोई परी आए और उनके घर का कायाकल्प कर दे। सुख–सुविधा के साधनों से भरपूर चमचमाता घर।बीमार सी दिखने वाली हमेशा काम काज में लगी रहने वाली नहीं बल्कि स्वस्थ सुंदर सदा हंसती– मुस्कुराती माँ। और उसके पढ़ाई के खर्चे के अलावा जेब खर्च के लिए भी किसी प्रकार का अभाव नहीं हो। यह सब वो किसी परी के जादुई जोर से हासिल करना चाहता था। दीदी को पता चल जाता तो उसके पागलपन पर हंसती या फिर इस नादानी के लिए डांटती–फटकारती।

समय गुजरता गया और धीरे–धीरे अमर का हर सपना साकार होने लगा। अब उसके साफ – सुथरे घर में आम जरूरत का हर साधन उपलब्ध था। माँ की सेहत अब अच्छी थी। वह प्रसन्नता से कोई लोकगीत या भजन गुनगुनाती रहती। मनचाहे महाविद्यालय में उसका दाखिला होने के साथ ही आने जाने के लिए उसके पास बाईक भी थी। यह सब एक परी की साधना से ही संभव हुआ था और दीदी है कि अब भी मानने को तैयार नहीं किंतु अब अमर के पास प्रमाण है और साहस भी। इसलिए उसने बताना जरूरी समझा।

''दीदी तुम कहती हो परियां नही होतीं। चलो आज मैं तुम्हें एक महान परी से मिलवाता हूं। जिसकी मेहनत के जादू से यह घर स्वर्ग से भी सुखद हो गया है।'' वह दीदी का हाथ पकड़कर आइने के सामने ले गया। और दीदी के प्रतिबिम्ब को देखते हुए मुस्कुराने लगा। उसने सोचा था परी को देखकर दीदी ठहाका लगाएगी। वह चौंका। परी की आंखों में आंसू थे और होठों पर मुस्कान।

– चेन्नई(तमिलनाडू)

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रखने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रखने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका